HPSC – HCS

HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 6

हिंदी एवं अंग्रेजी + सांख्यिकीय विश्लेषण (DI)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**HPSC-HCS (Haryana Public Service Commission – Haryana Civil Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**HPSC-HCS**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/wdvcfu

Online Order करें - https://bit.ly/40yVhHP

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

सामान्य हिन्दी

क्र.स.	अध्याय	पेज
1.	संधि एवं संधि विच्छेद	1
2	उपसर्ग	14
3	प्रत्यय	18
4	पर्यायवाची शब्द	26
5	विलोम शब्द	31
6	समश्रुत भिन्नार्गक शब्द	40
7	वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द	48
8	शब्द-शुद्धि	56
9	वाक्य-शुद्धि	61
10	मुहावरे	67
11	कहावत / लोकोक्ति	73
12	पारिभाषिक शब्दावली	78
13	संक्षिप्तीकरण	93
14	पल्लवन	96
15	पत्र-लेखन एवं प्रारूप लेखन	98
16	निबंध लेखन	114

General English		
S.N.	Chapter name	Page
1	Article and Determiners	120
2	Prepositions	135
3	Tenses and sequence of Tense	156
4	Modals	173
5	Voice - Active and passive	180
6	Narration - Direct & Indirect	188
7	Synonyms / Antonyms	194
8	Phrasal Verbs & Idioms	208
9	One Word Substitute	214
10	Words often Confused or Misused	221
11	Comprehension of Unseen Passage	224
12	Translation	236
13	Precis writing	243
14	Paragraph Writing	247
15	Elaboration of a given theme	251
16	Letter writing or Report writing	253

1.	सांख्यिकीय विश्लेषण, आरेख और रेखांकन ○ आँकड़ों का विश्लेषण (Data Interpretation) ○ Bar Graph (दण्ड आरेख) :- ○ रेखा चित्र(line graph)	262

	○ PIE CHARTS ○ Mixed DI ○ Airthmetic DI ○ साझेदारी(Partnership) ○ Caselete DI	

अध्याय – 1

संधि एवं संधि विच्छेद

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते है अर्थात् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं। उसे संधि कहते हैं।

संधि – 1.आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दुसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत्+ईश = जगदीश

वाक्+ईश = वागीश

2. आगम – अनु+छेद = अनुच्छेद

च्

3. लोप – अत:+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मन:+कामना = मन:कामना

संयोग – प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण : - युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

स्वर संधि – दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-

1.दीर्घ स्वर संधि
2.गुण स्वर संधि
3.वृद्धि स्वर संधि
4.यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ, ऋ, कुल 11 स्वर होते हैं।

1. **दीर्घ स्वर संधि** - यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ , इ , उ) के बाद समान
ह्रस्व (अ , इ , उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

उदा. अ/आ +अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

(1) अ +अ =आ

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी
अंध + अनुगामी = अंधानुगामी
अधिक + अंश = अधिकांश
अधिक + अधिक = अधिकाधिक
अस्त + अचल = अस्ताचल
आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र
उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार
उदय + अचल = उदयाचल
उप + अध्याय = उपाध्याय
उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर
ऊह + अपोह = ऊहापोह
काम + अयनी = कामायनी
गत + अनुगतिक = गतानुगतिक
गीत + अंजलि = गीतांजलि
छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी
जठर + अग्नि = जठराग्नि
जन + अर्दन = जनार्दन
तथ्य + अन्वेषण= तथ्यान्वेषण
तीर्थ + अटन = तीर्थाटन
दाव + अनल = दावानल
दीप + अवली = दीपावली
दाव + अग्नि = दावाग्नि
देश + अंतर = देशांतर
न्यून + अधिक = न्यूनाधिक
पद + अवनत = पदावनत
पर + अधीन = पराधीन
प्र + अंगन = प्रांगण
प्र + अर्थी = प्रार्थी
भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

अ + आ = आ

आम + आशय = आमाशय
गर्भ + आधान = गर्भाधान
अन्य + आश्रित = अन्याश्रित
गर्भ + आशय = गर्भाशय
आर्य + आवर्त = आर्यावर्त
फल + आहार = फलाहार
कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण
छात्र +आवास = छात्रावास

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

कुश + आसन = कुशासन

जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण

खग + आश्रय = खगाश्रय

जना +देश =जनादेश

गमन + आगमन = गमनागमन

भय + आक्रान्त = भयाक्रांत

भय + आनक = भयानक

पित्त + आशय = पित्ताशय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार

मेघ + आलय = मेघालय

लोक + आयुक्त = लोकायुक्त

विरह + आतुर = विरहातुर

विवाद + आस्पद = विवादास्पद

शत + आयु = शतायु

शाक + आहारी = शाकाहारी

शोक + आतुर = शोकातुर

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

सिंह + आसन = सिंहासन

स्थान + आपन्न = स्थानापन्न

हिम + आलय = हिमालय

जल + आशय = जलाशय

पंच + आयत = पंचायत

आ + अ = आ

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन

मुक्ता + अवली = मुक्तावली

तथा + अपि = तथापि

रचना + अवली = रचनावली

दीक्षा + अंत = दीक्षांत

विद्या + अर्जन = विद्यार्जन

द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट

श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि

द्राक्षा + अवलेह = द्रक्षावलेह

सुधा + अंशु = सुधांशु

निशा + अंत = निशांत

द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश

पुरा + अवशेष = पुरावशेष

महा + अमात्य = महामात्य

आ + आ = आ

कारा + आगार = कारागार

कारा + आवास = कारावास

कृपा + आकांशी = कृपाकांशी

क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक

चिंता + आतुर = चिंतातुर

दया + आनंद = दयानंद

द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव

निशा + आनन = निशानन

प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार

प्रेरणा +आस्पद = प्रेरणास्पद

भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध

महा + आशय = महाशय

रचना + आत्मक = रचनात्मक

वार्ता + आलाप = वार्तालाप

श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

(2) *इ / ई + इ /ई = ई*

इ + इ = ई

अति + इत = अतीत

अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय

अति + इव = अतीव

अधि + इन = अधीन

अभि + इष्ट =अभीष्ट

कवि + इंद्र = कविन्द्र

प्रति + इत = प्रतीत

प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा

मणि + इंद्र = मणीन्द्र

मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र

रवि + इंद्र = रवीन्द्र

हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + इ = ई

फणी + इंद्र = फणीन्द्र

महती + इच्छा = महतीच्छा

मही + इंद्र = महींद्र

यती + इंद्र = यतीन्द्र

शची + इंद्र = सुधींद्र

ई + ई =ई

नदी + ईश्वर = नदीश्वर

नारी + ईश्वर = नारीश्वर

फणी + ईश्वर = फणीश्वर

(2) दुस् / निस् + (च , छ , श) = दुस् / निस् के बाद च , छ , श वर्ण आने पर 'श' का आगमन हो जाता हैं |

उदाहरण – दुस् + चरित्र = दुश्चरित्र

दुस् + शासन = दुश्शासन

दुस् + शील = दुश्शील

निस् + चय = निश्चय

निस् + चल = निश्चल

निस् + चिंत = निश्चिन्त

निस् + चित् = निश्चित्

निस् + छल = निश्छल

निस् + शत्रु = निश्शत्रु

(3) दुस् / निस् के बाद यदि प / फ वर्ण आने के बाद 'ष' का आगमन हो जाता हैं |

उदाहरण – दुस् + परिणाम = दुष्परिणाम

दुस् + पाच्य = दुष्पाच्य

दुस् + प्रचार = दुष्प्रचार

दुस् + प्रहार = दुष्प्रहार

निस् + फल = निष्फल

दुस् + पंक = निष्पंक

निस् + पक्ष = निष्पक्ष

निस् + पति = निष्पति

निस् + प्राण = निष्प्राण

निस् + पन्न = निष्पन्न

निस् + पलक = निष्पलक

निस् + पादन = निष्पादन

निस् + पाप = निष्पाप

निस् + प्रथ = निष्प्रथ

(3). विसर्ग संधि

परिभाषा : – विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है विसर्ग संधि कहतें हैं।

जैसे – निः + आहार = निराहार

मनः + हर = मनोहर

नियम (I) :- यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो तथा विसर्ग के बाद किसी भी तीसरा , चौथा , पाँचवा वर्ण (घोष वर्ण) अंतःस्थ वर्ण या ऊष्म वर्ण आए तो 'अ' और विसर्ग(:)दोनों का 'ओ' हो जाता हैं |

उदाहरण –

अन्यः + अन्य = अन्योन्य

परः + अक्ष = परोक्ष

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

मनः + अनुभूति = मनोनुभूति

मनः + अनुसार = मनोनुसार

मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा

यशः + अभिलाषा = यशोभिलाषा

अधः + गति = अधोगति

अधः + भाग = अधोभाग

अधः + मुखी = अधोमुखी

अधः + वस्त्र = अधोवस्त्र

मनः + योग = मनोयोग

मनः + रंजन = मनोरंजन

मनः + विकार = मनोविकार

मनः + व्यथा = मनोव्यथा

मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान

अंततः + गत्वा = अंततोगत्वा

अधः + भूमि = अधोभूमि

तपः + बल = तपोबल

तपः + भूमि = तपोभूमि

तपः + वन = तपोवन

तिरः +धान = तिरोधान

तिरः + भूत = तिरोभूत

तिरः + हित = तिरोहित

पयः + ज = पयोज

पयः + द = पयोद

पयः + धर = पयोधर

पयः + धि = पयोधि

पयः + निधि = पयोनिधि

पुरः + गामी = पुरोगामी

पुरः + हित = पुरोहित

मनः + ज = मनोज

मनः + दशा = मनोदशा

मनः + धारा = मनोधारा

मनः + बल = मनोबल

मनः + भाव = मनोभाव

मनः + मंथन = मनोमंथन

मनः + रथ = मनोरथ

मनः + रम = मनोरम

शिरः + धार्य = शिरोधार्य

शिरः + भाग = शिरोभाग

नियम (2) :- यदि विसर्ग(:) से पहले 'अ' को छोड़कर अन्य कोई स्वर तथा विसर्ग के बाद किसी भी वर्ग का

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

तीसरा , चौथा, पाँचवा या अन्तस्थ वर्ण या कोई स्वर आए तो विसर्ग का 'र' हो जाता है।

- इ: / ई:/उ: + घोष व्यंजन = विसर्ग

आयु: + वेद = आयुर्वेद

आवि: + भाव = आविर्भाव

आवि: + भूत = आविर्भूत

आशी: + वाद = आशीर्वाद

चतु: + दिशा = चतुर्दिशा

धनु: + ज्ञान = धनुर्ज्ञान

धनु: + वेद = धनुर्वेद

प्रादु: + भाव = प्रादुर्भाव

बहि: + भाग = बहिर्भाग

बहि: + मुखी = बहिर्मुखी

स्व: + ग = स्वर्ग(अपवाद)

धनु: + धनुर्धारी

नियम (3) :- यदि इ:/उ: के बाद क/ प / म / आए तो विसर्ग का 'ष' वर्ण हो जाता है।

उदाहरण – आवि: + कार = अविष्कार

चतु: + कोण = चतुष्कोण

चतु: + कष्ठ = चतुष्कष्ठ

आयु: + मती = आयुष्मती

चतु: + पद = चतुष्पद

चतु: + पथ = चतुष्पथ

चक्षु: + मान = चक्षुष्मान

ज्योति: + मती = ज्योतिष्मती

बहि: + कृत = बहिष्कृत

बहि: + कार = बहिष्कार

वपु: + मान = वपुष्मान

नियम (4) :- यदि विसर्ग के बाद च , छ , श आए तो विसर्ग 'श' में बदल जाता है।

उदाहरण – अंत: + चेतना = अंतश्चेतना

आ: + चर्य = आश्चर्य

क: + चित् = कश्चित्

तप: + चर्या = तपश्चर्या

पुर: + चरण = पुरश्चरण

मन: + चेतना = मश्चेतना

यश: + शरीर = यशश्शरीर

यश: + शेष = यशश्शेष

(2). विसर्ग + मूर्धन्य अघोष व्यंजन (ट) आए तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है।

उदाहरण –

धनु: + टंकार = धनुष्टंकार

(3). यदि विसर्ग + दन्त्य अघोष व्यंजन (त, स) के बाद विसर्ग का 'स' हो जाता है।

नोट:- : + त = स्त

उदाहरण –

मन: + ताप = मनस्ताप

नम: + ते = नमस्ते

शिर: + त्राण = शिरस्त्राण

चतु: + सीमा = चतुस्सीमा

प्रात: + स्मरण = प्रातस्स्मरण

पुर: + सर = पुरस्सर

नियम (5) :- यदि अ: / आ: के बाद क / प आए तो विसर्ग का 'स' हो जाता है।

: + क = स्क

उदाहरण – तिर: + कार = तिरस्कार

नम: + कार = नमस्कार

पुर: + कार = पुरस्कार

पुर: + कृत = पुरस्कृत

भा: + कर = भास्कर

श्रेय: + कर = श्रेयस्कर

पर: +पर = परस्पर

बृह: + पति = बृहस्पति

भा: + पति = भास्पति

वाच: + पति = वाचस्पति

नियम (6). यदि विसर्ग के बाद 'र' वर्ण आए तो विसर्ग से पहले लघु मात्रा की दीर्घ मात्रा में बदल देते हैं तथा विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण – नि: + रस = नीरस

नि: + रोग = नीरोग

नि: + रव = नीरव

दु: + राज = दूराज

मदद – मददगार
याद – यादगार
दारः
खुशबू – खुशबूदार
चमक – चमकदार
जमा – जमादार
जमीन – जमींनदार
तहसील – तहसीलदार
थाना – थानेदार
दुकान – दुकानदार
नाकः
खतरा – खतरनाक
खौफ – खौफनाक
दर्द – दर्दनाक
शर्म – शर्मनाक
बाज :
चाल – चालबाज
दगा – दगाबाज
धोखा – धोखेबाज
नशा – नशेबाज
नक्शा – नक्शेबाज

अध्याय – 5

पर्यायवाची शब्द

इसे प्रतिशब्द / समानार्थी शब्द भी कहते हैं। जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं। हिन्दी में तत्सम पर्ययवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं, जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं। हिन्दी में तद्भव पर्ययवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्ययवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं -

(अ)

शब्द		**पर्याय**
अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	-	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड
अग्नि	-	आग, पावक, अनल, वह्नि, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर।
अनी	-	सेना, फौज, चमू, कटक, दल।
असुर	-	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर।
अरण्य	-	जंगल, वन, कानन, विपिन।
अश्व	-	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग
अंकुर	-	अँखुआ, कोंपल,कल्ला,नवोद्भिद्/
अंचल	-	पल्ला, पल्लू, आँचल।
अंत	-	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार
अंत	-	फल, अंजाम. परिणाम. नतीजा।
शब्द	-	**पर्याय**
अचल	-	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर
अचला	-	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	-	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना।
अधर	-	ओंठ, ओष्ठ, लब, रद-पट, होंठ
अनंग	-	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ।
अनल	-	'अग्नि'।
अनाज	-	अन्न, धान्य, शस्य।
अनिल	-	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत्।
अनुकम्पा	-	कृपा, मेहरबानी, दया।
अन्वेषण	-	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच।

अपना - निज, निजी, व्यक्तिगत ।

अपर्णा - पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी

अपमान - तिरस्कार, अनादर, निरादर ।

अप्सरा - देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या ।

अबला - नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री

अभय - निर्भय, निर्भीक, निडर, साहसी ।

अभिप्राय - तात्पर्य, आशय, मंतव्य ।

(आ)

आँख - नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग ।

आम - आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल ।

आग - अग्नि' ।

आकाश - व्योम, गगन, अम्बर, नभ, आसमान, अनन्ता ।

आनन्द - मोद, प्रमोद, आमोद, हर्ष, आह्लाद, उल्लास ।

आकांक्षा - अभिलाषा' ।

आँधी - तूफान, अंधड़, बवंडर ।

आर्त - दुखी, उद्विग्न, खिन्न, क्षुब्ध, कातर, संतप्त, पीड़ित ।

आर्यावर्त्त - भारत, हिन्द, हिन्दुस्तान, इंडिया।

आस्था - आदर, महत्व, मानं, कद्र ।

आहार - भोजन, खुराक, खाना ।

इ-ई

इंदिरा - कमला, रमा, लक्ष्मी, श्री, विष्णुप्रिया ।

इंदीवर - पंकज, जलज, नीरज, कमल, राजीव, उत्पल ।

इंदु - चाँद, राकेश, चन्द्रमा, सुधाकर, चन्द्र, निशाकर, हिमांशु, सुधांशु, राकापति, विधु,शशि,तारापति, मृगांक ।

इच्छा - अभिलाषा' ।

इन्द्रदेवराज - सुरपति, महेन्द्र, मेघराज, पुरन्दर, मघवा, शचीपति, विष्णु

इन्द्राणी - शची, पुलोमजा, इन्द्रवधू, इन्द्रप्रिया

इत्यादि - आदि, वगैरह, प्रभृति ।

ईर्ष्या - डाह, जलन, मत्सर, कुढ़न ।

ईश - ईश्वर, प्रभु, परमात्मा, भगवान्, परमपिता, परमेश्वर ।

ईश्वर - ईश'।

ईहा - इच्छा, आकांक्षा, एषणा, ईप्सा, चाह, कामना, स्पृहा, वांछा ।

उ – ऊ

उजाला - प्रकाश, ज्योति, प्रभा, आभा, रोशनी ।

उत्पल - 'इन्दीवर' ।

उत्पत्ति - जन्म, पैदाइश, उद्भव ।

उत्सव - पर्व, आयोजन, समारोह, त्यौहार

उत्साह - हौसला, उमंग, जोश ।

उदधि - सागर, समुद्र, सिन्धु, जलधि, पयोधि, नदीश ।

शब्द		**पर्याय**
उद्यान	-	उपवन, बाग, बगीचा ।
ऊँचा	-	उच्च, उत्तुंग, शीर्षस्थ, उन्नत ।
ऋषि	-	मनीषी, मुनि, साधु, महात्मा ।
एषणा	-	'इच्छा'।
ऐश्वर्य	-	वैभव, संपन्नता, समृद्धि ।
ओंठ	-	अधर' ।
औरत	-	स्त्री, वामा, महिला, वनिता, रमणी, अंगना ।
कमल	-	पद्म, अरविन्द, सरोज, जलज, कंज, सरसिज, उत्पल, वारिज, नलिन ।
कामदेव	-	अनंग' ।
किरण	-	अंशु, कट, रश्मि, मयूख, मरीचि
कुबेर	-	धनद, धनाधिप, यक्षराज, किनरेश
कंचन	-	स्वर्ण, कनक, हेम, सोना, हिरण्य
कच	-	कुंतल, बाल, अलक, गेसू, केश
कनक	-	कंचन' ।
कपड़ा	-	पट, वस्त्र, वसन, अम्बर ।

पति - स्वामी, भा, कांत, वल्लभ ।

पत्थर - पाहन, शिला, प्रस्तर, पाषाण, उपल ।

पत्नी - सहचरी, गृहिणी, परनी, भार्या, वारा, वल्लणा।

पथिक - पटोही, राही, पंथी, बटाऊ, मुसाफिर ।

शब्द - पर्याय

पर्वत - भूधर, पहाड़, गिरि, अचल, शैल, अद्रि ।

पवन - हवा, अनिल, वायु, समीर, बयार, वात ।

पशु - चौपाया, चतुष्पद, जानवर, मृग

पानी - जल, नीर, वारि, अंबु, सलिल, उदक ।

पिशाच - भूत, प्रेत, बैताल ।

पुत्र - बेटा, तनय, लड़का, सुत, आत्मज

पुत्री - बेटी, तनया, लड़की, सुता, दुहिता, आत्मजा ।

प्रभात - प्रातः, प्रातःकाल, बिहान, भोर, सबेरा ।

प्रिया - प्रेमिका, सजनी, प्रियतमा, प्रेयसी, दिलरुबा ।

प्रिय - प्रेमी, प्रियतम, साजन, प्यारा, स्नेही

प्रासाद - राजमहल, महल, सदन, भवन, हवेली ।

प्रेम - स्नेह, प्रीति, प्यार, अनुराग,ममता/

फूल - पुष्प, प्रसून, सुमन, कुसुम, गल

ब्रह्मा - स्वयंभू, स्रष्टा, प्रजापति, अज, विधाता, विधि, चतुरानन ।

ब्राह्मण - द्विज, विप्र, भूदेव, ज्येष्ठ वर्ण ।

भास्कर - रवि, सूर्य, दिवाकर, दिनकर, दिनेश, भानु ।

मछली - मत्स्य, मीन, सफरी, झख ।

मधुकर - भौंरा, भ्रमर, भृग, षट्पद, मधुप, अलि ।

महादेव - शंभु, शिव, शंकर, पशुपति, चन्द्रशेखर, त्रिलोचन, नीलकंठ, गिरीश ।

महेन्द्र - इन्द्र, सुरेश, देवराज, देवेन्द्र ।

मोक्ष - मुक्ति, निर्वाण, परमपद, कैवल्य

मोर - मयूर, केहा, शिखी, सर्पभक्षी, शिवसुतवाहन ।

(य-ह)

यम - कीनाश, श्राद्धदेव, धर्मराज, यमराज, सूर्यपुत्र, यमुनाभ्राता ।

यश - कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि, नाम ।

रजनी - रात, निशि, रात्रि, विभावरी ।

राजा - भूप, नृपति, नरपति, नरेश, नृप

राजीव - कमल, पंकज, नीरज, जलज, सरसिज, सरोज ।

रात - 'रजनी' ।

रात्रि - रजनी'।

रुद्र - महादेव, शंकर, शंभु, कैलाशपति, त्रिलोचन, महेश, शिव ।

लक्ष्मी - कमला, रमा, इन्दिरा, श्री।

वर्षा - वृष्टि, वारिस, बरसात, पावस,मेह

वसंत - मधुऋतु, मधुमास, ऋतुराज, कामसखा ।

शब्द - पर्याय

वायु - पवन'।

विधु - इंदु' ।

विमाता - सौतेली माँ, दुमाता, उपमाता ।

विष - जहर, गरल, हलाहल, कालकूट

विष्णु - गोविन्द, केशव, श्रीपति, जनार्दन, चक्रपाणि, मुकुन्द, नारायण ।

वीर - योद्धा, सूरमा, शूर, बहादुर, पराक्रमी ।

वृक्ष - तरु, पेड़, पादप, विटप, द्रुम । शंकर-रुद्र' ।

शत्रु - रिपु, दुश्मन, अरि शराब-सुरा, मद्य, मदिरा, हाला ।

शिखी - मोर' ।

शिव - रुद्र'।

श्रम - परिश्रम, उद्योग, उद्यम, मेहनत ।

अध्याय – 8

शब्द शुद्धि

भाषा में शुद्ध उच्चारण के साथ शुद्ध वर्तनी का भी महत्त्व होता है। अशुद्ध वर्तनी से भाषा का सौन्दर्य तो नष्ट होता ही है, कहीं कहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। वर्तनी अशुद्धि के कई कारण हो सकते हैं यथा-

1. **स्वरागम के कारण** :- निम्न शब्दों में किसी वर्ण के साथ अनावश्यक स्वर प्रयुक्त हो जाने से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है अतः उसे हटा कर वर्तनी शुद्ध की जा सकती है।

अशुद्ध वर्तनी	=	शुद्धवर्तनी
अत्याधिक	=	अत्यधिक
आधीन	=	अधीन
अभ्यार्थी	=	अभ्यर्थी
अनाधिकार	=	अनधिकार
अहिल्या	=	अहल्या
दुरावस्था	=	दुरवस्था
शमशान	=	श्मशान
गत्यावरोध	=	गत्यवरोध
प्रदर्शिनी	=	प्रदर्शनी
द्वारिका	=	द्वारका
वापिस	=	वापस
घुट्ना	=	घुटना
व्यौपारी	=	व्यापारी
भागीरथ	=	भगीरथ

2. **स्वरलोप के कारण** : उचित स्वर के अभाव के कारण

आखरी	=	आखिरी
आप्लवित	=	आप्लावित
कुटम्ब	=	कुटुम्ब
दुगनी	=	दुगुनी
जलूस	=	जुलूस
बदाम	=	बादाम
मैथली	=	मैथिली
विपन्नवस्था	=	विपन्नावस्था
अगामी	=	आगामी
सतरंगनी	=	सतरंगिनी
गोरव	=	गौरव
युधिष्ठर	=	युधिष्ठिर
महात्म्य	=	माहात्म्य
अक्ष्यक्षरी	=	अक्ष्याक्षरी
आजीवका	=	आजीविका
फिटकरी	=	फिटकिरी
कुमुदनी	=	कुमुदिनी
विरहणी	=	विरहिणी
स्वस्थ्य	=	स्वास्थ्य
वाहनी	=	वाहिनी
वयवृद्ध	=	वयोवृद्ध
पारितोषक	=	पारितोषिक
मुकट	=	मुकुट
भगीरथी	=	भागीरथी
अजानु	=	आजानु
अष्टवक्र	=	अष्टावक्र
उन्नतशील	=	उन्नतिशील
जमाता	=	जामाता
अतिश्योक्ति	=	अतिशयोक्ति
नृत्यंगना	=	नृत्यांगना
मुकन्द	=	मुकुन्द
लोकिक	=	लौकिक

3. **व्यंजनागम के कारण** : शब्द में अनावश्यक व्यंजन के प्रयुक्त हो जाने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अवन्नति	=	अवनति
प्रज्वलित	=	प्रज्वलित
बुद्धवार	=	बुधवार
अन्तर्ध्यान	=	अन्तर्धान
सदृश्य	=	सदृश
पूज्यनीय	=	पूजनीय
निश्च्छल	=	निश्छल
श्राप	=	शाप
समुन्द्र	=	समुद्र
निद्रित	=	निन्द्रित
केन्द्रीयकरण	=	केन्द्रीकरण
कुत्तिया	=	कुतिया
शुभेच्छुक	=	शुभेच्छु
गोवर्द्धन	=	गोवर्धन
कृत्य-कृत्य	=	कृत-कृत्य
षष्ठम्	=	षष्ठ

4. **व्यंजन लोप के कारण** : किसी वर्तनी में व्यंजन के न लिखने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अध्यन	=	अध्ययन
ईर्ष्या	=	ईर्षा
उमीदवार	=	उम्मीदवार
तदन्तर	=	तदनन्तर
व्यंग	=	व्यंग्य
सामर्थ	=	सामर्थ्य
उछृंखल	=	उच्छृखल
द्वन्द	=	द्वन्द्व
उद्देश	=	उद्देश्य
उत्पन	=	उत्पन्न
महत्व	=	महत्त्व
समुनयन	=	समुन्नयन
समुचय	=	समुच्चय
मिष्टान	=	मिष्टान्न
इन्द्रा	=	इन्दिरा
उलंघन	=	उल्लंघन
उपलक्ष	=	उपलक्ष्य
चार दीवारी	=	चहार दीवारी
तरुछाया	=	तरुच्छाया
स्तनपान	=	स्तन्य पान
आर्द	=	आर्द्र
तत्वाधान	=	तत्त्वावधान
निरलम्ब	=	निरवलम्ब
श्रेयकर	=	श्रेयस्कर
राजाभिषेक	=	राज्याभिषेक
स्वालम्बन	=	स्वावलम्बन
स्वातन्त्र	=	स्वातन्त्र्य
योधा	=	योद्धा
द्विधा	=	द्विविधा

5. वर्णक्रम भंग के कारण वर्तनी में किसी वर्ण का क्रम बदलने पर अर्थात् वर्ण का क्रम आगे पीछे होने पर वर्तनी अशुद्ध हो जायेगी। यथा-

अथिति	=	अतिथि
चिन्ह	=	चिह्न
मध्यान्ह	=	मध्याह्न
ब्रम्हा	=	ब्रह्मा
आव्हान	=	आह्वान
जिव्हा	=	जिह्वा
गव्हर	=	गह्वर
आन्नद	=	आनन्द
आल्हाद	=	आह्लाद
प्रसंशा	=	प्रशंसा
अलम	=	अमल
मतबल	=	मतलब

6. **<u>वर्णपरिवर्तन के कारण</u>** : किसी वर्तनी में किसी वर्ण के स्थान पर दूसरा वर्ण लिख देने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

बतक	=	बतख
दस्तकत	=	दस्तखत
जुखाम	=	जुकाम
ऊँगना	=	ऊँघना
संगटन	=	संघटन
मेगनाद	=	मेघनाद
संघठन	=	संगठन
रिमजिम	=	रिमझिम
यथेष्ठ	=	यथेष्ट
सन्तुष्ठ	=	सन्तुष्ट
मिष्ठान्न	=	मिष्टान्न
परिशिष्ठ	=	परिशिष्ट
संश्लिष्ठ	=	संश्लिष्ट
बलिष्ट	=	बलिष्ठ
कनिष्ट	=	कनिष्ठ
कटहरा	=	कठहरा
बसिष्ट	=	वसिष्ठ
युधिष्टिर	=	युधिष्ठिर
कुष्ट	=	कुष्ठ
सीड़ी	=	सीढ़ी
धनाड्य	=	धनाढ्य
रामायन	=	रामायण
ऋन	=	ऋण
पुन्य	=	पुण्य
सुश्रूषा	=	शुश्रूषा
अवकास	=	अवकाश
आशीश	=	आशीष
शोडशी	=	षोडशी
आमिश	=	आमिष
कैलाश	=	कैलास
विध्वंश	=	विध्वंस
पुरष्कार	=	पुरस्कार
निसिद्ध	=	निषिद्ध
विध्यालय	=	विद्यालय

Time barred	-	कालातीत / कालबाधित
Time limit	-	कालावधि
Time table	-	समय सारणी
Toll Tax	-	पथकर
Transaction	-	संचालन/लेनदेन
Transit	-	संक्रमण
Tribunal	-	अधिकरण
Trust	-	न्यास/विश्वास
	(U)	
Ultravires	-	शक्ति बाह्य
Unanimity	-	सर्व सम्मति/मतैक्य
Unavoidable	-	अपरिहार्य
Under Certificate of Posting	-	डाक प्रमाणित
Underlying	-	के नीचे / अन्तर्निहित
Undisbursed	-	अवितरित
Undue	-	अनुचित
Unforeseen	-	अदृष्ट
Unilateral	-	एकपक्षीय
Unstarred	-	अतारांकित
Unpaid	-	अदत्त
Upgrading	-	उन्नयन
Uphold	-	पुष्टकरना /
Utilization certificate	-	उपयोग प्रमाणपत्र
	(V)	
Vague	-	अस्पष्ट / अनिश्चित
Valid	-	विधिमान्य
Vigilance	-	सर्तकता

अध्याय – 13

संक्षिप्तीकरण

संक्षिप्तीकरण या संक्षेपीकरण अथवा संक्षेपण प्रेसी (Precis) का भाषा अनुवाद है। लैटिन भाषा के प्रेसीडर (Praecidere) से प्रेसी शब्द बना है जिसका अर्थ होता है काँट-छाँट कर छोटा रूप करना। संक्षिप्तीकरण या संक्षेपीकरण शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है। संक्षेपीकरण की तरह सारांश, सरलीकरण, भावार्थ, मुख्यार्थ, आशय आदि में भी संक्षिप्त रूप में लिखने पर बल दिया जाता है, पर संक्षेप इनसे स्वतंत्र कला है। इसकी अपनी शैली है।

संक्षेपण का अर्थ है संक्षिप्त या छोटा करना होता है । किसी अनुच्छेद, परिच्छेद, विस्तृत कथा अथवा प्रतिवेदन को जितने कम से कम शब्दों में प्रस्तुत किया जाए जिसमें उस विषय का पूर्ण भाव एवं उद्देश्य स्पष्ट हो सके को उसे संक्षेपण कहते हैं । सरल तरीकें से हम यह कह सकते हैं कि अनावश्यक बातों को लगभग हटाकर एक तिहाई शब्दों में उसकी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बातों को व्यक्त कर देना को ही संक्षेपण कहते है ।

संक्षिप्तीकरण वह कला है जिसके द्वारा किसी वक्तव्य को, किसी विषय को कम-से-कम शब्दों में प्रस्तुत करने पर भी स्वयं में पूर्ण हो। उसमें मूल का न कोई अंश छूटता है और न ही उसके अनिवार्य आशय को समझने में कोई कमी आती है।

संक्षेपक संक्षिप्तीकरण करते समय औचित्य के लिए मूल अवतरण या विषय के क्रम में परिवर्तन करके उसे अधिक संगत बना देता है। इसके साथ ही संक्षिप्तीकरण करते समय वाक्यों की संगति और संबंध रखना भी आवश्यक होता है। जिससे विचारों के तारत्व में अन्तर न आ जाए। तात्पर्य यह है कि संक्षिप्तीकरण वह कला या रचना है, जिसमें किसी वक्तव्य, लेख आदि में व्यक्त भावों को मूल की अपेक्षा कम शब्दों में प्रतिपादित किया जाए। संक्षिप्तीकरण में मूल का लगभग एक तिहाई भाग होता है।

उपयोगिता

संक्षिप्तीकरण की कला की अपनी उपयोगिता है। इस कला से विद्यार्थी में स्वतंत्र निर्णय लेने की योग्यता बढ़ती है। वह असार छोड़कर सार ग्रहण करने में समर्थ होता है। किंतु इसके लिए अभ्यास की परम आवश्यकता है। संक्षिप्तीकरण से भाषा लिखने का सामर्थ्य आता है। संक्षिप्तीकरण से लेखक की योग्यता का विकास होता है। संक्षिप्तीकरण कार्यालयों में कार्यप्रणाली का प्रमुख हिस्सा है। इसके बिना कार्यालय का काम-काज ठप्प हो सकता है। पत्रकारों और संवाददाताओं के लिए भी इस कला का बहुत महत्त्व है।

संक्षेपण के प्रकार (Type of Critical Precis)

- समाचार का संक्षेपण – हर एक समाचारों के संक्षेपण में तिथि, स्थान तथा संबंध रखने वाले व्यक्तियों के नाम का

उल्लेख किया जाना चाहिए अर्थात् इस प्रकार के संक्षेपणों में शीर्षक प्रभावी होना चाहिए ।

- संवाद का संक्षेपण – हर एक संवाद का संक्षेपण आवश्यक नहीं होता है । स्पष्ट दिखाई देने वाला कथन को जो दिखाई न दे उस कथन में रहना चाहिए । उद्धरण चिह्नों (" ") को हटा देना चाहिए तथा संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग करना चाहिए ।
- पत्राचारों का संक्षेपण – सभी कार्यालयों में पत्राचारों के संक्षेपण की आवश्यकता होती है।

संक्षिप्तीकरण के गुण

व्यावहारिक जगत में, विविध कार्यालयों में, प्रेस कांफ्रेंस आदि में विस्तृत वक्तव्य या अवतरण की रूपरेखा संक्षिप्त करना आजकल आवश्यक है। संक्षिप्तीकरण के अभाव में ऐसा करना असंभव है। इसके लिए आधारभूत निम्न गुण कहे गए हैं।

1. **पूर्णता** :- संक्षिप्तीकरण अपने आप में पूर्ण होना चाहिए। पढ़ने के बाद ऐसा लगना चाहिए कि उसका कोई मुद्दा छूटा नहीं है।
2. **संक्षिप्तता**:- संक्षिप्तीकरण करते समय मूल अवतरण के दृष्टांत, व्याख्या और अलंकारिकता आदि उससे अलग कर देने चाहिए। साधारणतः संक्षिप्तीकरण का एक तिहाई भाग स्वीकृत माना जाता है।
3. **स्पष्टता** : संक्षिप्तीकरण का पाठक मूल अनुच्छेद नहीं पढ़ता, इसलिए इसमें कोई मुद्दा नहीं छूटना चाहिए। अगर इसमें व्यर्थ का विस्तार किया जाता है तो इससे अस्पष्टता आ जाती है।
4. **तारतम्य** : अच्छे संक्षिप्तीकरण में एक तारतम्य होना चाहिए। विचारों में असम्बद्धता नहीं होनी चाहिए। इसमें एकसूत्रता होनी चाहिए। प्रत्येक वाक्य में श्रृंखलाबद्धता होनी चाहिए जिससे क्रम में हानि न हो।
5. **प्रभावोत्पादकता** : मूल अवतरण के बिखरे क्रम में परिवर्तन कर उसे प्रभावोत्पादक बनाया जाता है। यह अच्छे संक्षेपक का गुण है। भावों की क्रमबद्धता अच्छे संक्षिप्तीकरण में प्रभाव पैदा करने की क्षमता रखती है।
6. **सारता** : अच्छा संक्षिप्तीकरण मूल अवतरण का सार मात्र होना चाहिए, अतः अनुच्छेद से न कुछ
कम होना चाहिए और न विस्तार होना चाहिए।

इन तत्त्वों के अतिरिक्त संक्षिप्तीकरण अप्रत्यक्ष कथन शैली में किया जाना चाहिए, मूल अनुच्छेद के शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। आकार की वृद्धि रोकने के लिए मुहावरें, लोकोक्तियाँ व दृष्टांत आदि निकाल देने चाहिए। विशेषणों और क्रिया विशेषणों को हटा देना चाहिए। टीका-टिप्पणी निकाल देनी चाहिए। भूमिका व उपसंहार आदि का भी महत्त्व नहीं है।

इस प्रकार इन सब तत्त्वों या गुणों को ध्यान में रखकर संक्षिप्तीकरण करना चाहिए।

संक्षिप्तीकरण की विधि

संक्षिप्तीकरण करते समय संक्षिप्तीकरण लेखक को इसके गुणों को ध्यान में रखना चाहिए और लिखने के लिए पूर्ण मनोयोग के साथ बैठना चाहिए। संक्षेपक संक्षिप्तीकरण करते समय निम्नलिखित विधि अथवा प्रणाली अपना सकता है:-

1. **मूल अनुच्छेद का पठन** : संक्षिप्तीकरण करते समय संक्षेपक को मूल अवतरण को कम-से-कम तीन बार पढ़ना चाहिए। पढ़ते हुए उसे विशिष्ट वाक्यों को रेखांकित कर लेना चाहिए अथवा असार वाक्यों को रेखांकित करना चाहिए। अगर किसी शब्द का ज्ञान नहीं है तो उसे शब्द कोश का आश्रय लेना चाहिए।
2. **शीर्षक का चुनाव** : प्रायः शीर्षक अवतरण के केन्द्रीय भाव से जुड़ा होता है। यह आकार में लघु होना चाहिए अथवा कुछ शब्दों में होना चाहिए। यह एक पंक्ति से बड़ा नहीं होना चाहिए। यह कथ्य के साथ मेल खाने वाला होना चाहिए। इस शीर्षक में गंभीरता होनी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो संक्षेपक दो-तीन शीर्षक का चुनाव कर सकता है उसमें भी सबसे उपयुक्त का चुनाव कर सकता है।

   शीर्षक प्रायः अनुच्छेद के आरम्भ में एक शब्द से सूचित होता है। कभी-कभी यह भूमिका अथवा उपसंहार में होता है। कभी शीर्षक अवतरण के मध्य होता है। कभी यह अवतरण के अन्त में होता है। अगर इनमें भी शीर्षक न मिले तो मूल कथ्य को पढ़कर शीर्षक तैयार किया जा सकता है।
3. **शब्द संख्या से संक्षिप्तीकरण के आकार का निर्माण** :- शब्द संख्या से संक्षिप्तीकरण के आकार का निर्माण किया जाता है। संक्षेपक मूल अनुच्छेद को पढ़कर और उसके शब्दों की गणना कर, मूल अनुच्छेद के एक-तिहाई शब्दों में (थोड़ा बहुत या अधिक) संक्षिप्तीकरण करें। शब्द गणना करते समय अगर विभक्तियाँ शब्दों के साथ जुड़ी हुई हों तो उस रूप में और अलग हों तो उस रूप में गणना करें। प्रायः परीक्षा में संकेत दे दिया जाता है कि संक्षिप्तीकरण इतने शब्दों में किया जाना चाहिए। अगर ऐसा संकेत न हो तो एक पंक्ति के शब्दों की गणना कर उन्हें कुल पंक्तियों से गुणा कर शब्द संख्या निकाल लेनी चाहिए।
4. **संक्षिप्तीकरण के प्रारूप का निर्माण** : अगर विद्यार्थी के पास समय हो तो संक्षिप्तीकरण का पहले प्रारूप तैयार करना चाहिए। यह मूल अनुच्छेद के आधे के बराबर होना चाहिए। प्रारूप में अन्य पुरुष का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस प्रारूप में विशेषणों, कहावतों व मुहावरें आदि को निकाल देना चाहिए। क्रिया विशेषणों को भी अलग कर देना चाहिए।
5. **तथ्यात्मकता का प्रारूप** : शीर्षक चुनाव के बाद मुख्य विषय से संबंधित सामग्री का चुनाव करना चाहिए। इसके लिए मुख्य तत्त्वों को रेखांकित करना चाहिए अथवा अनावश्यक सामग्री को रेखांकित करना चाहिए। इन दोनों प्रकारों में एक को अपनाकर संक्षिप्तीकरण तैयार करना चाहिए। किंतु मूल कथ्य में ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

Chapter-2

Prepositions

Preposition मतलब pre + position

pre का अर्थ पहले (before) होता है, जबकि position का अर्थ स्थान (place) होता है। अतः preposition एक ऐसा word है, जो noun or pronoun के पहले प्रयुक्त होकर noun or pronoun का संबंध sentences के अन्य शब्दों से दिखलाता है।

A preposition is a word used before a noun or pronoun to show its relation with the other words of the sentence.

Example:-

1. The book is **on** the table.
2. The pen is **in** the inkpot
3. The cat is **under** the table.

उपयुक्त शब्दों में on, in, under, का प्रयोग क्रमश the table, the inkpot, the table के पहले प्रयुक्त हुआ जो वाक्य के अन्य शब्दों -the book, the pen, the cat से सबंध बताता है अत on, in, under, prepositions हैं I

Correct Use of Prepositions:-

(A) Use of 'At':-

Rule (1):-At का प्रयोग छोटे स्थानों के नाम (name of smaller places) के पहले 'में' के अर्थ में होता है। जैसे-

My brother lives at Jajuar. (गांव)

I live at Musallahpur hat. (मुहल्ला)

Rule (2) :- At का प्रयोग नीचे दिये गए शब्दों के बाद 'लक्ष्य' के अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

shout at	grumble at	shoot at
laugh at	mock at	bite at
look at	kick at	aim at smile at
growl at		

Rule (3):-At का प्रयोग समय को अभिव्यक्त करने के लिए 'पर' के अर्थ में होता है। जैसे-

He will reach at 5 a.m.

He came at 6 0' clock

Rule (4) :-At का प्रयोग नीचे दिये गए शब्दों के पहले होता है। जैसे-

At the station	At page 50
At a concert	At school
At the airport	At a match
At the bottom	At college
At the theatre	At home
At a lecture	At a concert
At à conference	At the top
At the bus stop	At the bridge
At the bus stop	At university
At the platform	

Rule (5) : 'At' का प्रयोग समय सूचक शब्दों के पहले होता है।

At night At noon At dawn

At dusk At midnight At afternoon

At daybreak At twilight

Rule (6) : At का प्रयोग निम्नलिखित शब्दों के पहले होता है। जैसे-

At this moment At bed time

At this hour At Christmas

At Easter

Rule (7) : At का प्रयोग कीमत/दर/चाल की दर को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों के पहले होता है। जैसे-

Milk sells at Rs. 22/- a litre. (दर -rate)

He got that book at Rs. 50. (कीमत-price)

The motorcycle is running at eighty kilometres an hour. (चाल की दर-speed)

Rule (8) : At का प्रयोग temporary action (अस्थायी कार्य) को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

He is at work. अर्थ -He is working now.

She is at play. अर्थ—She is playing now.

Rule (9) : At का प्रयोग उम्र (age) तथा चरण (stage) को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों के पहले होता है। जैसे-

My grandfather died at the age of sixty.

I left college at twenty five.

(B) Use of 'In' :-

Rule (1) : In का प्रयोग बड़े स्थानों (bigger places) जैसे—देश, शहर, राज्य, महादेश ,महानगर आदि के नामों के पहले होता है। जैसे-

We live in India. (देश)

India is in Asia. (महादेश)

She lived in Uttar Pradesh. (राज्य)

Mr. Thakur lives in Patna. (शहर)

My father-in-law lives in Mumbai. (महानगर)

Rule (2) : In का प्रयोग निम्नलिखित phrases में होता है। जैसे-

In the night

In the evening

In the morning

In the afternoon

ध्यान दें : In the night or at night के प्रयोग में फर्क होता है ।

Note : In the night का प्रयोग 'किसी निश्चित रात' के अर्थ में होता । जबकि at night का प्रयोग 'किसी रात' के अर्थ में होता है।

Rule (3) : In का प्रयोग निम्नलिखित शब्दों के पहले 'में या के अंदर' के अर्थ में होता है। जैसे-

In the world	In a newspaper
In a queue	In a city
In the sky	In a street
In a village	In the house
In a letter	In the room
In a town	In hospital
In the bus	In prison
In church	In the rain

इन वाक्यों को देखें:

We live in the world.

In the bag

He is in the room.

Rule (4) :In का प्रयोग permanent action (स्थायी कार्य) को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

His brother is in the Army. He is in the Navy

I am in the education.

He is in the politics.

Rule (5) : In का प्रयोग period of time expressing words (अवधि/समय सूचक शब्दों) के पहले होता है। जैसे-

महीनों के नाम के पहले :-

In a week	In January
In this week	In February

ऋतुओं के नाम के पहले :-

In this month	In this season
In summer	In spring
In winter	In autumn

सालों का नाम के पहले :-

In 1999	In the year of 1942
In 2001	In the year of 1993

शताब्दियों के नाम से पहले :-

In 1947 In this century

In the eighteenth century

In the sixteenth century

उम्र के नाम के पहले :-

In the Victorian age

In the Elizabethan age

Rule (6) : In का प्रयोग A/An + car / taxi / jeep के पहले होता है | example -

He goes to college in a car. (√)

She went to school in a jeep. (√)

Her lover goes to the office in a taxi. (√)

Rule (7) : In का प्रयोग possessive adjectives + car/taxi/jeep के पहले होता है। जैसे-

He is sitting **in** his car.

(C) Use of 'Into' :-

Rule (1) : Into का प्रयोग motion, inside, anything-(किसी चीज के भीतर की ओर गति) के भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

The frog fell **into** the well.

Rule (2) : Into का प्रयोग एक माध्यम से दूसरे माध्यम में या एक अवस्था से दूसरे अवस्था में परिवर्तन के लिए होता है। जैसे-

Translate **into** English.

Milk turns **into** curd.

Rule (3) : Into का प्रयोग 'का/के/की के' अर्थ में भी होता है। **जैसे-**

The police inspector enquired into the case.

पुलिस इन्सपेक्टर ने मुकदमे की जाँच की।

That old man has insight into man's character.

बूढ़े व्यक्ति को मनुष्य के चरित्र का ज्ञान है।

Rule (4) : Into का प्रयोग verbs के बाद होने पर उसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है। **जैसे-**

Break into = जबरदस्ती प्रवेश करना

Do into= अनुवाद करना

Eat into = नष्ट करना

Let into= अनुमति देना

Look into = जाँच करना

See into= विचार करना

Turn into = अनुवाद करना. बदलना

(D) Use of 'On' :-

Rule (1):On का प्रयोग 'स्थान स्पर्श के भाव को अभिव्यक्त करने के लिए 'घर' के अर्थ में होता है। **जैसे-**

There are two books **on** the table.

Rule (2): On का प्रयोग 'को'/'पर' के अर्थ में time expressing words (समय को सूचित करने वाले शब्दों) के पहले होता है। निश्चितता के भाव का बोध होने पर इसका प्रयोग होता है।

जैसे-

On Tuesday On Monday evening

On the morning On the event

On the evening On the 1st January

On Monday On the same night

अग्रलिखित समय सूचक शब्दों के पहले in का प्रयोग नहीं होता है ! **जैसे -**

In Monday

In Tuesday

In Monday evening

In the following evening

In the morning of the event

In the same night

In the evening of the 1st January.

Rule (3): On का प्रयोग A/An/the + bus/train/aeroplane/ ship के पहले होता है। **जैसे-**

He was on a bus/ a train/a plane/ a ship.

Rule (4): On का प्रयोग A/An + cycle/ scooter/motorcycle के पहले होता है। **जैसे-**

He was on a cycle / a scooter / a motorcycle.

Rule (5) : On का प्रयोग Possessive Adjectives + cycle/ scooter/motorcycle के पहले होता है। **जैसे-**

He goes to school on his cycle/ scooter/motorcycle.

Rule (6): On Tom foot, a horse, horse's back, a camel, a camel's back, an elephant, elephant's back, a buffalo, buffalo's back के पहले होता है। जैसे-

He walks on foot.

He was riding on a horse.

Rule (7) : On का प्रयोग 'की ओर' के अर्थ में Direction (दिशा) का बोध कराने के लिए होता है। जैसे-

The robber drew a dagger on him.

Rule (8) : On का प्रयोग निम्नलिखित शब्दों के पहले होता है। **जैसे-**

- on television
- on a diet
- on demand
- on a cold day on holiday
- on 15th March
- on the radio on business on duty
- on the phone on a tour
- on loan
- on the telephone on a trip
- on page 50
- on strike
- on the wall
- on leave
- on a journey on guard
- on fire
- on the committee on the wholesale

Rule (9) : On का प्रयोग 'के विषय' 'संबंध में' के अर्थ में होता है।

जैसे-

This is a book **on** English Grammar.

Rule (10) : On का प्रयोग 'आधिकारिक रूप से सदस्य' होने के भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। **जैसे-**

He is on the staff of the B.P.S.C.

Rule (11) : On का प्रयोग कुछ phrases में भी होता है। जैसे-

- on the first floor on the second floor
- on the left
- on the ground floor on the front of a letter
- on a list
- on the back of paper on the right
- on a farm

(E) Use of 'Between' :-

Rules (1) : Between का शाब्दिक अर्थ 'के बीच में' होता है। इसका प्रयोग two persons or things (दो व्यक्तियों या वस्तुओं) के लिए होता है। जैसे--

There was a beautiful garden in front of my school. (√)

मेरे विद्यालय के सामने एक सुन्दर उद्यान था।

Note : In front of तथा Before का प्रयोग 'के सामने' के अर्थ में इस प्रकार भी होता है। **जैसे-**

Manoj is standing in front of me in the queue. (√)

मनोज मेरे सामने कतार/पंक्ति में खड़ा है।

(T) Use of 'Around' and 'Round'

Rule (1) : Around का प्रयोग 'बाहर से चारों ओर', 'यहाँ-वहाँ', 'बहुत स्थानों में तथा 'के विभिन्न भागों में के अर्थ में होता है। जैसे-

They were sitting around the garden.

वे लोग उद्यान के विभिन्न भागों में बैठे हुए थे।

Stop walking around and start some business.

यहाँ-वहाँ टहलना बंद करो और कोई व्यापार प्रारंभ करो।

Rule (2) : round का प्रयोग 'चारों ओर' के अर्थ में वृत्ताकार पथ तथा वक्राकार पथ के लिए होता है। जैसे-

We were sitting round the dinning table.

हम लोग डाइनिंग टेबल के चारों ओर बैठे हुए थे।

The earth moves round the sun.

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।

Rule (3) : Around का प्रयोग 'लगभग' के अर्थ में होता है। जैसे—

There were around fifty students in the class.

कक्षा में लगभग पचास छात्र थे।

(U) Use of 'Amid' and 'Amidst:-

Rule (1) : Amid/Amidst का प्रयोग 'के बीच में (in the middle of) के अर्थ में place को सूचित करने के लिए किया जाता है। जैसे-

A beautiful girl was sitting amid/amidst the young.

एक सुन्दर लड़की जवान व्यक्तियों के बीच में बैठी हुई थी।

There was a small cottage amid/amidst the buildings.

मकानों के बीच में एक छोटी झोपड़ी थी।

Rule (2) : Uncountable nouns के पहले 'के बीच में' के अर्थ में Amid/Amidst का प्रयोग होता है, न कि Among / Amongst का ।

जैसे-

Honesty is useless amid/amidst dishonesty.

ईमानदारी बेईमानी के बीच में व्यर्थ/बेकार होती है।

(V) Use of 'Up' and Down':-

Rule (1) : Up का प्रयोग 'ऊपर को', 'ऊँचा', 'चरम सीमा पर', 'ऊपर' के अर्थ में होता है। जैसे-

He got up to ask a question.(up-ऊपर को)

Prices of articles are still going up.(up-ऊँचा)

Stop writing, the time is up (up-चरम सीमा पर)

Phrases	**English Meaning**	**Hindi Meaning**
Up and down	to and fro	इधर उधर
Ups and downs	changes of fortune	भाग्य का उत्थान पतन
On the up	frank, honest, sincere	ईमानदार, सच्चा
Up with	to raise	उठाना, उभारना

Rule (2) : Down का प्रयोग 'नीचे', 'उतराव', 'गिरावट' के अर्थ में होता है। जैसे-

The sun has gone down.

Jump down carefully.

Phrase	**English Meaning**	**Hindi Meaning**
Bent down	Inclined	झुका हुआ
Down to the ground	completely	पूर्ण रूप से
To get down	to descend	उतरना
To hiss down	to silence	चुप करना

(W) Use of 'Through' :-

Rule (1) : Through का प्रयोग by means of (के माध्यम से) के अर्थ में होता है। जैसे-

He knew it through a newspaper.

वह समाचार पत्र के माध्यम से इसे जाना।

Rule (2): Through का प्रयोग go get from one side to the other (इस पार से उस पार तक/आर-पार) के अर्थ में होता है। जैसे-

The beggar went through the market.

Can you see through glass ?

Rule (3) : Through का प्रयोग from beginning to the end (शुरू से आखिर तक) के अर्थ में होता है। जैसे-

People got bored and could not sit through the night.

Note : (i) Get through = परीक्षा में उत्तीर्ण होना जैसे-

They got through the examination.

वे लोग परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

(ii) Go through = अनुभव करना जैसे-

He went through many difficulties.

Rule (4) : जबकि throughout का प्रयोग in every part of (प्रत्येक स्थान पर/हर जगह) के अर्थ में होता है। जैसे-

He was with me throughout the day

(X) Use of 'Beyond' :-

Rule (1) : Beyond का प्रयोग the farther side of (उस तरफ उससे आगे) के अर्थ में होता है। जैसे-

Don't go beyond the river.

There is a village beyond the pond.

Rule (2) : Beyond का प्रयोग later than (बाद तक) के अर्थ में समय को सूचित करने वाले शब्दों के पहले होता है। जैसे-

Don't remain out beyond midnight. ,

Rule (3) : Beyond का प्रयोग except (सिवाय,इसके अलावे) के अर्थ में होता है।

My uncle has nothing beyond his provident fund.

Note :

Phrases	**Hindi Meaning**
To get beyond	पहुँच से बाहर होना
To go beyond	नीलाम में

(Y) Use of 'During:-

Rule (1) : During का प्रयोग in course of (दौरान/ दरम्यान) के अर्थ में सामान्यतः होता है। जैसे-

The sun gives us light during the day.

Nobody would talk during my discourse.

Rule (2): During a fare certain period of time के पहले होता है । है। जैसे-

During the war

During the winter

During the strike

During Easter

During the meeting

During his childhood / 1947

During the middle age

During the function

During Dipawali

During the examination

During Holi

During the summer vacation

During the summer

During the week

During the day

During the month

During the night

During the year

During the spring

During the morning

Rule (3) : During का प्रयोग 'स्थिति' (state) के भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

The people suffer hardship during the war.

Rule (4) : During का प्रयोग किसी कार्य के दौरान आदत' को दिखाने के लिए भी किया जाता है। जैसे-

During the dinner he talked about his plan.

(Z) Use of 'Against:-

Rule (1) : Against का प्रयोग In contravention of (के विरुद्ध) के अर्थ में होता है। जैसे-

The workers have acted against the orders of the director.

One should not go against the rule.

Rule (2) : Against का प्रयोग opposite (के विपरीत प्रतिकूल) के अर्थ में होता है। जैसे-

Sailing against the current is difficult.

It is difficult to paddle the cycle against the wind.

Rule (3) : Against का प्रयोग 'पर', 'से सटकर' के अर्थ में होता है।

There is a ladder against the wall.

She is leaning against the chair.

Rule (4) : Against का प्रयोग तुलना (comparison) के भाव की अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे--

The director knows nothing against my character,

I am writing this book against the circumstances.

(A) Use of 'From:-

Chapter – 9

One Word Substitute

S. No.	Statement	OWS with Hindi meaning
1.	Words inscribed on the tomb	Epitaph / समाधि- लेख
2.	A Fear of closed / dark places	Claustrophobia / संवृत- स्थान - भीति
3.	Something no longer in use	Obsolete / अप्रचलित
4.	A remedy for all diseases	Panacea / रामबाण
5.	One who is indifferent to pleasure or pain	Stoic / वैरागी
6.	One who is difficult to please	Fastidious / तुनुक मिजाज
7.	One who is concerned with the welfare of other	Altruist / परोपकारी
8.	The thing that can be easily broken	Brittle / नाजुक
9.	An animal that lives in a group	Gregarious / झुंड में रहने वाला
10.	That which cannot be easily read	Illegible / पठनीय
11.	Incapable of being corrected	Incorrigible / असुधार्य
12.	That which cannot be avoided	Inevitable / अतिनिष्ठावान
13.	A method which never fails	Infallible / अचूक
14.	One who hates women	Misogynist / महिलाद्वेषी
15.	A state where no law and order exits	Anarchy / अराजकता
16.	A study of ancient things	Archaeology / पुरातत्व विज्ञान
17.	A lover of books	Bibliophile / पुस्तक प्रेमी
18.	One who eats human flesh	Cannibal / नरभक्षी
19.	People living at the same time	Contemporaries / समकालीन
20.	To free completely from blame	Exonerate / निर्दोष ठहराना
21.	A speech made without preparation	Extempore / बिना तैयारी के करना या बोलना
22.	The act of killing whole group of people, especially whole race	Genocide / जनसंहार
23.	Easily duped or fooled	Gullible / भोला - भाला
24.	Extreme fear of water	Hydrophobia / जलभीति
25.	A voice that cannot be heard	Inaudible / अश्राव्य
26.	That which cannot be called back	Irrevocable / अटल
27.	Detailed plan of a journey	Itinerary / यात्राक्रम

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 1

सांख्यिकीय विश्लेषण, आरेख और रेखांकन
Statistical Analysis, diagrams and graphs

आलेखों का उद्देश्य संख्यात्मक तथ्यों को चित्रों द्वारा निरूपण करना है, जिससे उन्हें शीघ्रता से और सुगमतापूर्वक समझा जा सके। इस प्रकार के प्रश्नों को हल करने के लिए सबसे पहले आपको

- प्रतिशत
- औसत
- अनुपात
- लाभ और हानि

इन विषयों को अच्छे से सीखना चाहिए। उपर्युक्त विषयों को सीखे बिना सांख्यिकी के प्रश्नों को हल करना लगभग असंभव है।
अध्ययन के घंटे की योजना बनाएं और सांख्यिकी अभ्यास के लिए प्रत्येक दिन कम से कम एक समय तय करें।

आँकड़े/समंक (Data): ऐसे तथ्य जो विशेष गुणों से युक्त हो, उनका संख्यात्मक रूप में प्रदर्शन समंक कहलाता है। इसे साधारणतः दो रूपों में प्रदर्शित किया जाता है– गुणात्मक एवं संख्यात्मक।
आँकड़ों का प्रदर्शन (Representation of Data): आँकड़ों को प्रदर्शित करने की निम्नलिखित तीन विधियाँ हैं–
(i) सारणी द्वारा प्रदर्शन (Tabulation Representation)
(ii) चित्रों द्वारा प्रदर्शन (Diagrammatic Representation)
(iii) लेखाचित्रों द्वारा प्रदर्शन (Graphic Representation)
आँकड़ों का विश्लेषण (Data Interpretation):- आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण करने के लिए संख्यात्मक विश्लेषण द्वारा तथ्यों को सूक्ष्मता प्रदान की जाती है। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न तथ्यों की तुलना सुगम हो जाती है। संकलित आँकड़े अव्यवस्थित एवं जटिल रूप में होते हैं, उन्हें प्रस्तुतीकरण से पूर्व सारणीयन द्वारा सरलता से समझा जा में सकता है और आँकड़ों को प्रस्तुत करने में सुगमता होती है।
छ विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित आंकड़ों को प्रस्तुत करने के लिये आलेख) Graph) का सहारा लिया जाता है। ये आलेख निम्न प्रकार के होते हैं–
Tabular DI :- **टेबुलर DI डेटा को represent करने के बेसिक रूपों में से एक है। टेब्युलर DI भी दो प्रकार का होता है, एक जहाँ सारा डेटा दिया जाता है जैसे – Table DI**

Stores	Total ball point pens sold	Ratio of ball point pens to gel pens sold
A	108	9 : 5
B	240	6 : 5
C	200	4 : 1
D	150	3 : 1
E	120	3 : 2

Missing Table DI :- Missing Table DI **वह होता है जहाँ कुछ डेटा गायब होता है और missing data को स्टूडेंट्स को find करना होता है. जैसे –**

Person / Days	A	B	C	D	E
सोमवार	420	440	240	-	280
मंगलवार	360	-	520	210	410
बुधवार	280	240	410	425	-
गुरुवार	540	510	-	630	160
शुक्रवार	-	460	350	510	400

Bar Graph (दण्ड आरेख) :-
यह भी डेटा विश्लेषण का एक तरीका है. इसमें डेटा को दर्शाने के लिए विभिन्न आकार की पट्टियों(bars) का उपयोग किया जाता है. **बार ग्राफ पर प्रत्येक बार या कोई अन्य पैटर्न विभिन्न प्रकार के डाटा की मात्रा को represent करता है.** आप नीचे दिए गए उदाहरण से बार ग्राफ़ डेटा विश्लेषण का अभ्यास कर सकते हैं

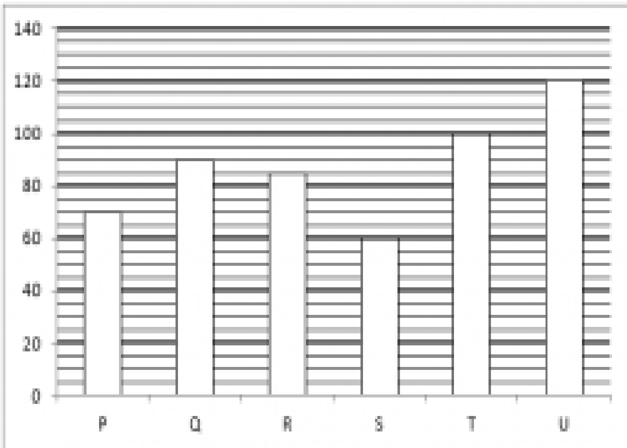

यदि स्कूल P में फेल होने वाले बच्चों का प्रतिशत 65% हैं, तो स्कूल P से फेल होने वाले स्टूडेंट्स की संख्या, स्कूल T से उत्तीर्ण छात्र की संख्या का कितना प्रतिशत है.
यदि सभी स्कूल के कुल पास और फेल होने वाले छात्रों के बीच का अनुपात 7: 3 है, तो सभी स्कूलों से फेल होने वाले स्टूडेंट्स की कुल संख्या ज्ञात करें ।

स्कूल P, Q, U और T से उत्तीर्ण सभी छात्र, स्कूल R और S की तुलना में कितना अधिक है.

स्कूल U का में असफल छात्रों की संख्या स्कूल R की तुलना में 15 अधिक है यदि स्कूल .U की स्कूल R के कुल छात्रों की संख्या का अनुपात 3: 2 है, तो दोनों स्कूलों के कुल छात्रों की कुल संख्या ज्ञात करें

Q. नीचे दी गई तालिका 5 वर्षों के दौरान दो विषयों P और Q) के लिए मास्टर प्रोग्राम के लिए एक विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त आवेदनों की संख्या से संबंधित डेटा को दिखाती है

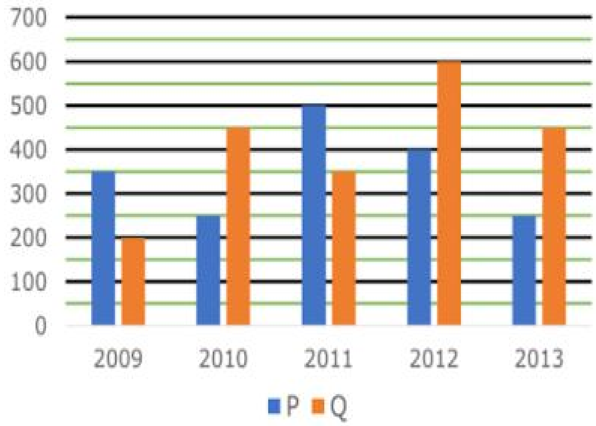

1. 2010 में, P और Q विषयों के लिए संयुक्त रूप से प्राप्त आवेदनों की कुल संख्या में से केवल 40% स्वीकार किए गए थे। 2010 में P और Q विषयों के लिए संयुक्त रूप से स्वीकृत कुल __ आवेदनों की संख्या कितनी थी?

a. 121
b. 132
c. 280
d. 340
e. 270

ANS.(c)

2010 में, P और Q विषयों के लिए स्वीकार किए गए आवेदनों की कुल संख्या %40 का (450 + 250) =

$= \frac{40}{100}$ x 280 = 700

2. 2009 में, विषय P में प्राप्त आवेदनों में से 30% और विषय Q में प्राप्त आवेदनों में से 40% अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के थे। 2009 में विषय P और Q में संयुक्त रूप से कुल अंतर्राष्ट्रीय आवेदनों की संख्या कितनी थी?

a. 185
b. 265
c. 180
d. 253
e 195

ANS. 185 (a)

Number of international applications received for subjects P and Q in 2009 $= \frac{350 \times 30}{100} + \frac{200 \times 40}{100}$

$= 105 + 80 = 185$

3. यदि 2013 और 2014 में संयुक्त रूप से P और Q विषयों के लिए प्राप्त आवेदनों की कुल संख्या का संबंधित अनुपात 5:6 है, तो 2014 में संयुक्त रूप से P और Q विषयों में प्राप्त आवेदनों की कुल संख्या कितनी थी?

a. 930
b. 684
c. 835
d. 745
e. 840

ANS. 840 (e)

2013 में, P और Q विषयों के लिए प्राप्त आवेदनों की कुल संख्या 700= 450+ 250 =

2014 में दोनों दोनों विषयों के लिए प्राप्त आवेदनों की कुल संख्या = $\frac{6}{5}$ x 840 = 700

4. 2010,2012 और 2013 मे विषय P में प्राप्त आवेदनों की औसत संख्या कितनी है

a. 400
b. 520
c. 300
d. 450
e 560

ANS.(c)

Required average $= \frac{250+400+250}{3} = \frac{900}{3} = 300$

5. विषय Q के लिए प्राप्त आवेदनों की संख्या में 2011 से 2013 तक कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई?

a. 28.57
b. 29.4
c. 19.33
d. 23.57
e इनमें से कोई नहीं

ANS(a)

Required Percentage $= \left(\frac{450-350}{350} \times 100\right) = \frac{100}{350} \times 100 = \frac{200}{7} = 28\frac{4}{7}\%$

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Q29. निम्न में से कौन-सी स्थिति कभी संभव नहीं हो सकती?

(i) निर्वाचन क्षेत्र B और C के बराबर संख्या में वोट दिए गए हैं, क्योंकि वह पार्टी C से जीती है।

(ii) पार्टी XYZ के उम्मीदवार निर्वाचन क्षेत्र E से 28000 मतदाताओं से हार गये है

(iii) निर्वाचन क्षेत्र A और B के वोटों के समान संख्या में मतदान किये गये है।

(iv) निर्वाचन क्षेत्र B और D के विजेता को समान संख्या में वोट प्राप्त होते है

(a) केवल (i)

(b) केवल (i) और (iii)

(c) (i), (ii) और (iv)

(d) (i) और (ii)

(e) ये सभी संभावित है

Ans (d)

(i)
If Party XYZ wins from C, total votes polled in constituency is
$= 2 \times \frac{37.5}{100} \times 30000$
= 225000

Candidate of party XYZ got 75000 votes from constituency B.
If these constituencies have equal votes, winner candidate gets
$= \frac{25}{100} \times 225000$
= 57750
Hence it is not possible.

(ii) Party got, 37500 votes from E, which is 35% of total polled votes (If we assume only 2 candidates). Hence winner must have more than twice votes.
It is also not possible.

(iii) It is possible, and we can't check it whether party lost or won.

(iv) it is also possible, as we don't have information on number of votes.

Directions (30-34): नीचे दिए गए रेखा आरेख में, दिल्ली से पांच विभिन्न शहरों तक की दूरी (कि.मी. में) दी गई है तथा नीचे दी गई तालिका में पांच विभिन्न कारों की गति (कि.मी./घं. में) दी गई है।

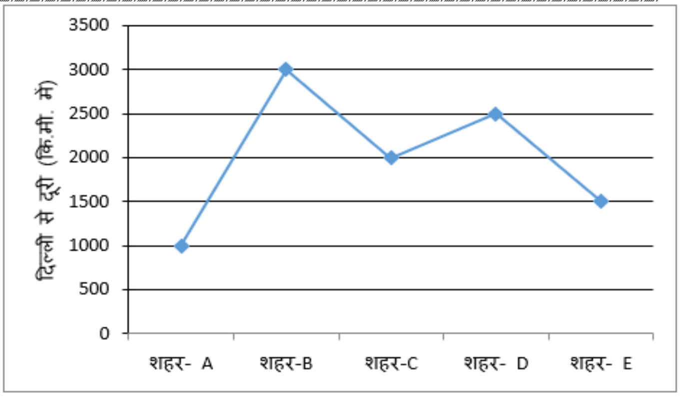

कार	गति (किमी/घंटे में)
P	40
Q	—
R	60
S	—
T	75

नोट - : कुछ आँकड़े लुप्त हैं, आपको प्रश्न के अनुसार इनकी गणना करनी है।

Q30. कार-P द्वारा शहर-E से दिल्ली तक की यात्रा करने और फिर दिल्ली से शहर-B तक की यात्रा करने में लिया गया समय, कार-R द्वारा दिल्ली से शहर-A तक और फिर शहर-A से शहर-B तक की यात्रा तय में लिए गए समय के समान है। शहर-A और शहर-B के बीच दूरी ज्ञात कीजिए।

(a) 5650 किमी

(b) 5750 किमी

(c) 5450 किमी

(d) 5550 किमी

(e) 5320 किमी

Distance travel by car P = 1500 + 3000 = 4500 km

Total Time taken $= \frac{4500}{40} = 112.5$ hour

Time taken by car R from Delhi to City A $= \frac{1000}{60} = \frac{50}{3}$ hours

Time taken from city A to city B $= 112.5 - \frac{50}{3}$

$= \frac{287.5}{3}$

Distance from between City A to city B

$= \frac{287.5}{3} \times 60 = 5750$ km

Q31. यदि शहर-A और शहर-E क्रमशः दिल्ली की उत्तर और पूर्व दिशा में हैं, तो कार-T द्वारा शहर-A से शहर-E तक पहुँचने में लगने वाला लगभग समय ज्ञात कीजिए।

(a) 24 घंटे

(b) 27 घंटे

(c) 20 घंटे

(d) 36 घंटे

(e) 42 घंटे

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/wdvcfu 1 web.- https://bit.ly/40yVhHP

FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.